''क्या तू चंगा होना चाहता है?''

(5:1-18)

अमेरिकी लोगों के सामने, ''बेथसदा'' का नाम लें तो उनके दिमाग़ में बेथसदा नेवल हॉस्पिटल और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ हैल्थ ही आएंगे। दिलचस्प बात यह है कि इस नाम से एक छोटा सा नगर मेरीलैण्ड इसी कारण संसार का एक प्रसिद्ध मेडिकल सेंटर बन गया! एक दिन जब अमेरिका के दिवंगत राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रुज़वेल्ट उस नगर में से अपने विश्वसनीय सलाहकार हैरी होप्किंस के साथ जा रहे थे, तो होप्किंस ने उन्हें उस नगर के विचित्र नाम तथा उस नाम के पीछे के इतिहास के बारे में बताया। यह सुनकर राष्ट्रपति रुज़वेल्ट ने निर्णय लिया कि नया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ बनाने के लिए यही स्थान उपयुक्त है।[1] लगता है कि बेथसदा चंगाई के स्थान के लिए एक बिल्कुल उपयुक्त नाम है।

चंगाई (5:1-8)

यरूशलेम में भेड़ों के द्वार के पास ''बेतहसदा'' नाम का एक तालाब था,[2] जिसका अर्थ है ''दया का घर।'' यह स्थान चंगाई के लिए प्रसिद्ध था, सो ''रोगी, अंधे, लंगड़े और सूखे हाथ-पांव वाले लोग'' तालाब के इर्द-गिर्द बने पांच ओसारों में ही रहने लगते थे। अवश्य ही यह बहुत ही दयनीय दृश्य होगा जिसमें यरूशलेम का सारा दुख और पीड़ा एक ही जगह इकट्ठा हो गया हो। आज भी संसार के कई भागों में, परिवार के किसी सदस्य के अस्वस्थ हो जाने पर जब वह ''अपना बोझ उठाने'' में असमर्थ होता है, उसे पास के किसी नगर में भीख मांगने के लिए छोड़ दिया जाता है। यरूशलेम में पहली शताब्दी के दौरान ऐसा ही प्रचलन था।

पीड़ित लोग बेतहसदा के कुंड के पास इकट्ठे होते थे क्योंकि वहां उन्हें एक उम्मीद की किरण दिखाई देती थी। वे चंगा होने की और भी कोशिशें कर चुके थे और अन्त में विफल होकर वहां आ जाते थे। परन्तु उन्होंने इस कुंड पर चंगा होने की बात सुन रखी थी सो वे इसकी अद्‌भुत शक्ति से चंगा होने की प्रतीक्षा में रहते थे। आज मेडिकल क्षेत्रों में गैर परम्परागत बीमारियों के इलाज के बारे में जिन्हें आज डॉक्टरों द्वारा चंगा नहीं किया जा

सकता है, बहस छिड़ी हुई है। हम में से अधिकतर लोग, चाहे उनका ऐसे उपचारों के प्रति कोई भी विचार क्यों न हो, जानते हैं कि यदि हम मर रहे हों, तो इलाज के लिए थोड़ी सी उम्मीद होने पर भी हम उसे देखने की हर सम्भव कोशिश करते हैं। त्यागे गए लोगों के मनों में भी बेतहसदा के पानी हिलने की बात कुछ ऐसी ही थी।

एक यहूदी पर्व के दौरान, जब यरूशलेम आगन्तुकों से भरा हुआ था और हर किसी में उमंग थी, तो यीशु ने बेतहसदा के कुंड के पास से गुजरते हुए एक आदमी को देखा, जो अड़तीस वर्षों से वहां बीमार पड़ा हुआ था (5:5)। गत वर्ष जब मैंने बाइबल के इस भाग को पढ़ा तो इस आदमी के दुख के समय के बारे में थोड़ी सी जानकारी से मुझ पर इतना असर हुआ जितना पहले कभी नहीं हुआ था। इस वर्ष मई में मैं अड़तीस वर्ष का हो गया हूं। यह आदमी मेरी उम्र जितने वर्षों से बीमार पड़ा था! पता नहीं कि उसके लिए अड़तीस वर्ष का वह समय कैसा रहा होगा।

कुंड के पास उस आदमी को देखकर और उसकी कहानी को जानते हुए, यीशु ने एक अजीब सा प्रश्न पूछा: ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' (5:6)। उसने ऐसा क्यों कहा? क्या उसे यह मालूम नहीं था कि हर बीमार व्यक्ति चंगा होना *चाहता* है? क्या यह मूर्खता की हद और किसी लंगड़े आदमी का अपमान करने जैसा नहीं है कि उसे कहा जाए कि क्या तू चलना चाहता है?

विचार करने पर, हम देखते हैं कि शायद यीशु द्वारा कोई और प्रश्न पूछने से यह सचमुच एक अच्छा प्रश्न था। यह प्रश्न इसलिए भी ज़रूरी था क्योंकि हर कोई अच्छा *नहीं* होना चाहता। हमारे जीवन में कुछ परिवर्तन आने पर सामान्यतया हमारी दुनिया ही बदल जाती है। क्या यह लंगड़ा आदमी उन परिवर्तनों के लिए तैयार था? क्या वह अपने ऊपर जिम्मेदारी लेने को तैयार था? क्या वह छोटा-मोटा काम पाकर हर रोज़ काम पर जाने को तैयार था? क्या वह दुखों के मारे एक व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान खोकर ज़िंदा रह सकता था? चाहे शारीरिक, भावनात्मक या आत्मिक कष्ट हो जिससे हम पीड़ित हैं, यीशु का प्रश्न कि ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' सचमुच एक बहुत अच्छा प्रश्न है।

उस आदमी की प्रतिक्रिया द्वारा यीशु को यह बताना था कि वह अभी भी दुखी था क्योंकि जब भी पानी हिलता था और चंगा होने की सम्भावना बनती थी, तो कुंड में उसके जाने से पहले ही कोई और रोगी पानी में कूद पड़ता था (5:7)। फिर यीशु ने इस आदमी को निर्देश दिया, ''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर'' (5:8)। उस आदमी ने जो स्वयं भी हैरान था और उसे जानने वाला हर कोई भी, वैसे ही किया जैसे यीशु ने कहा था: वह चलने लगा! सुसमाचार की इस पुस्तक में यूहन्ना द्वारा विश्वास पर अधिक ज़ोर देने के कारण, यह ध्यान देने वाली बात है कि इस व्यक्ति के विश्वास के बारे में कुछ नहीं कहा गया। सच्चाई यह है, कि वह अपने सामने होने वाली घटना और उस आश्चर्यकर्म के द्वारा अपनी चंगाई से पैदा हुए विवाद के कारण उलझन में पड़ गया होगा।

विवाद (5:9-15)

क्या आप अड़तीस वर्षों तक लंगड़े होने और चंगा होने के दिन अपनी खाट उठाने के लिए लोगों द्वारा आलोचना करने की कल्पना कर सकते हैं? कुंड पर इस आदमी के साथ भी यही हुआ था। यहूदी अगुवे उसे अपनी खाट उठाने के कारण डांटने लगे थे क्योंकि उनके विचार से ऐसा करने का अर्थ सब्त के दिन का उल्लंघन करना था (5:10)। इतने लम्बे समय से बीमार रहने वाले आदमी का जवाब था, जिसने मुझे चंगा किया उसी ने मुझे अपनी खाट उठाने के लिए कहा, तो ऐसे आदमी की इच्छाओं से जो अभी-अभी चंगा हुआ हो कौन इन्कार कर सकता था?

यहूदी अगुओं को बड़ी ठोकर लगी थी, क्योंकि उन्हें लगता था कि दो तरह से सब्त को तोड़ा जा रहा है। पहले तो उन्हें यह देखकर क्रोध आया कि यह आदमी सब्त के दिन अपनी खाट उठा रहा है, और फिर उन्हें यह जानकर क्रोध आया कि यीशु ने इस आदमी को सब्त के दिन चंगा किया था। लगता है कि वे इस बात से रोमांचित हो गए थे कि इस आदमी को अड़तीस वर्ष के कष्ट से छुटकारा मिला था! परन्तु वे परम्पराओं में इतनी बुरी तरह से जकड़े हुए थे कि वे इस व्यक्ति या जिसने भी उसे चंगा किया उसके द्वारा सब्त के दिन को तोड़ने की सम्भावना के बारे में सोच भी नहीं सकते थे।

रब्बी लोगों का परम्पराओं के सम्बन्ध में सब्त का दिन यीशु का सबसे पसन्दीदा परीक्षण था। पुराने नियम में सब्त का नियम बहुत ही स्पष्ट व सरल था अर्थात यह कि सब्त के दिन कोई काम न किया जाए।[3] यीशु के समय तक, रब्बियों अर्थात धार्मिक गुरुओं ने इस बात पर काफ़ी चर्चा करवाई थी कि सब्त के दिन क्या किया जाना चाहिए और क्या नहीं। मिश्नाह में पहली शताब्दी में पाई जाने वाली बहुत सी शिक्षाओं का वर्णन करते हुए, सब्त के लिए एक पूरा भाग समर्पित किया गया है। कुल मिलाकर, सब्त के दिन उन्तालीस कामों जैसे बीज बोने, चक्की चलाने, छानने, खाना बनाने, बुनने, शिकार करने, दो पत्र लिखने, आग जलाने और हथौड़ा चलाने की मनाही थी।[4]

स्पष्टतया, सब्त के दिन से जुड़े नियमों को पूरी तरह से भुला दिया गया था और यह नियम ऐसे हो गए थे जैसे इनकी आवश्यकता ही न हो। एक अन्य अवसर पर यीशु ने अपने विरोधियों को याद दिलाया था, ''सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए, इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है'' (मरकुस 2:27, 28)। जैसे इस आयत से पता चलता है, यीशु और यहूदी अगुओं में हुए विवाद का सब्त के दिन को तोड़ने से उतना सम्बन्ध नहीं था जितना कि सब्त के दिन होने वाली चंगाई से यीशु की सच्ची पहचान के प्रकट होने से।

परिणाम (5:16-18)

इस चंगाई के समय, कुंड के किनारे रहने वाले आदमी को कुछ भी पता नहीं था कि उससे कौन कह रहा है कि, ''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।'' यीशु फिर वहां से जल्दी से भीड़ में से होता हुआ निकल गया था। परन्तु विवाद के बाद, यीशु ने उस आदमी

को मन्दिर में देखकर उससे फिर पाप न करने का आग्रह किया, कि उस पर इससे भी भारी विपत्ति न आ पड़े (5:14) यीशु के साथ इस दूसरी मुलाकात के बाद, वह आदमी यहूदी अगुओं के पास गया और उन्हें बताया कि उसे चंगा करने वाला यीशु ही था।

यहूदी अगुवे शांत और संयम में न रह सके अर्थात उन्होंने उस बात को अध्ययन हेतु विचार के लिए अपना निर्णय नहीं बदला। बल्कि सब्त के ऐसे उल्लंघनों के कारण ''यहूदी यीशु को सताने लगे'' (5:16)। फिर यीशु ने दृढ़ता से ऐलान किया कि उसके विरोधी क्या विचार कर रहे हैं। उसने कहा, ''मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं'' (5:17)। इससे उनका शक और पक्का हो गया था। वास्तविक मुद्दा सब्त के दिन काम करने का नहीं था; बल्कि मुद्दा तो यह था कि यीशु कौन था और उसे यह अधिकार किसने दिया था। सब्त के दिन किसी को चंगा करने से यह संकेत मिलना था कि यीशु सब्त के दिन से बड़ा है। यहूदी अगुवे उस सम्भावना पर विचार करने के बजाय, बिना सोचे समझे उसे मारने की कोशिशें करने लगे (5:18)। वे जान गए थे कि परमेश्वर को अपना पिता कहकर यीशु अपने आपको ''परमेश्वर के तुल्य ठहराता था'' (5:18)। जैसे आगस्टिन का अवलोकन है, ''वे आश्चर्यकर्म में प्रकाश के बजाय सब्त में अंधेरे को ढूंढ़ रहे थे।''

इस पूरे भाग में महत्वपूर्ण शब्द ''चिह्न'' नहीं मिलता। सुसमाचार की इस इस पुस्तक में, ''चिह्न'' यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों को कहा गया है जो आश्चर्यकर्म करने के उसके स्रोत की ओर संकेत था। इस कहानी में, निश्चय ही एक आश्चर्यकर्म हुआ था। परन्तु ये लोग इतने कठोर थे कि उनकी नज़र आश्चर्यकर्म के स्रोत तक जाती ही नहीं थी। जिस कारण यूहन्ना ने इसे ''चिह्न'' के रूप में वर्णित नहीं किया।

कुंड पर उस आदमी की चंगाई के समय की घटना को किसी के अपरिवर्तित रहने की घटना कही जा सकती है। जिस प्रकार प्रेरितों के काम में हमें बार-बार लोगों के अपरिवर्तित रहने के मामले मिलते हैं वैसे ही इन लोगों ने सच्चाई का सामना तो किया परन्तु उसे स्वीकार नहीं कर पाए। यह ऐसी बात है जहां ''ज्योति अंधकार में चमकती है; और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया'' (1:5)। यहूदी अगुओं द्वारा यीशु में विश्वास करने से इन्कार करने के परिणामस्वरूप, यूहन्ना रचित सुसमाचार में यहां से यीशु का घोर विरोध शुरू हो गया था।

सारांश

अध्याय 4 तथा 5 का खेदजनक विभाजन हमें 4:46-54 में राजा के कर्मचारी की कहानी और 5:1-18 में यरूशलेम में यहूदी अगुओं के वृत्तांत में सम्बन्ध बनाने से रोकता है। दोनों ने ही एक आश्चर्यकर्म देखा था। दोनों के सामने ही यीशु की पहचान का प्रश्न सुलझाने का दबाव था। कई तरह से उनकी स्थिति एक जैसी ही थी! फिर भी उनके निष्कर्ष पूरी तरह से अलग-अलग थे। अध्याय 4 के ''चिह्न'' से एक बीमार लड़के के पिता के मन में विश्वास उत्पन्न हुआ था, जबकि अध्याय 5 के आश्चर्यकर्म से यहूदी अगुओं के मन कठोर ही हुए थे।

आज इस कहानी को दोबारा बताने पर, इसे सुनने वाले लोगों में दो प्रकार की

प्रतिक्रिया ही होती है। कुछ लोग हैं जो इन आयतों में लिखी गई बातों के कारण बहुत विश्वास करने लगते हैं, परन्तु ऐसे लोग भी हैं जो इन्हीं बातों को सुनकर परमेश्वर से दूर चले जाते हैं। फिर, हमें सुसमाचार की इस पुस्तक के लिखे जाने के लिए यूहन्ना का उद्देश्य स्मरण कराया जाता है:

> यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।

क्या आप सुन रहे हैं ? क्या आप देख रहे हैं ? क्या आप खोज में हैं ? क्या आपका मन खुला है ? इन आयतों की बातों से आपका मन किस तरफ मुड़ा है ?

पाद टिप्पणियां

[1]गेरर्ड स्लोयन, *जॉन,* इन्टरप्रिटेशन: ए बाइबल कमैन्ट्री फ़ॉर टीचिंग एण्ड प्रीचिंग (अटलान्टा, जॉर्जिया.: जॉन नौक्स प्रैस, 1988), 78. [2]इसे बैथज़था या बैथसेदा भी कहा जाता है। [3]निर्गमन 20:8–11; व्यवस्थाविरण 5:12–15. [4]एम. शाब. 7:2.

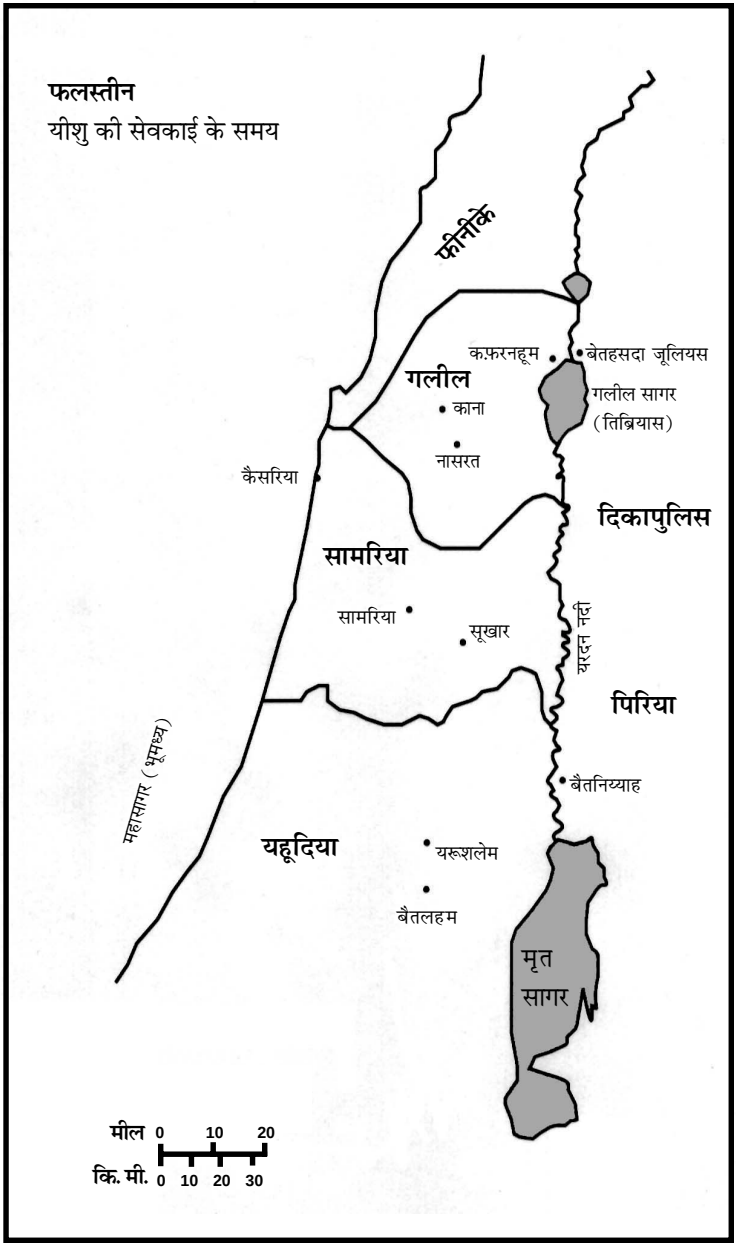
फलस्तीन
यीशु की सेवकाई के समय
फीनीके
कफ़रनहूम
बेतहसदा जूलियस
गलील
गलील सागर
(तिब्रियास)
काना
नासरत
कैसरिया
दिकापुलिस
सामरिया
सामरिया
सूखार
यरदन नदी
पिरिया
महासागर (भूमध्य)
बैतनिय्याह
यहूदिया
यरूशलेम
बैतलहम
मृत
सागर
मील 0 10 20
कि. मी. 0 10 20 30